

richten auf: पापे निविशते मनः Spr. (II) 894. obliegen: स्वधर्मे M. 2, 8. अर्थे MBh. 7, 3073. तदा वर्णा यथाधर्मं निविशेयुः कथंचन 12, 2933. — 8) zukommen (Gegens. abgehen): (गुणाः) सत्त्वे निविशते ऽपैति Cit. bei Vor. zu 4, 16. so v. a. zur Anwendung kommen KĪTJ. ÇR. Comm. 56, 3 (act.). 57, 24. 58, 2. — 9) sich legen so v. a. sich beruhigen, aufhören: नि वो नु मन्युर्विशताम् RV. 10, 34, 14. der Wind 168, 3. — 10) partic. निविष्ट a) zur Ruhe gegangen VS. 22, 7. मनो निविष्टमनुसंविशस्व AV. 18, 3, 9. तस्यां सुपर्णावधि यौ निविष्टौ TBr. 3, 7, 2, 14. gelagert: बलम् MBh. 3, 661. HARIV. 4974. 9701. R. 2, 84, 1 (91, 1 GORR.). 99, 1. 100, 1. सागरं प्रति R. GORR. 1, 4, 93. 4, 40, 1. 5, 74, 26. 73, 3. MĀLAY. 67, 21. KATHĀS. 46, 34. 47, 9. सुनिविष्टाश्च रतिणाः aufgestellt R. 5, 49, 14. an einem Orte verweilend, sich aufhaltend Bhāg. P. 1, 3, 44. धर्मपथे R. 3, 48, 18. 5, 11, 18. — b) hineingegangen, eingedrungen ĀÇV. GRHJ. 1, 14, 7. Bhāg. P. 5, 11, 14. ruhend in, auf, steckend an, in: तस्य मे तून्वो बद्धा निविष्टाः RV. 10, 51, 4. AV. 9, 1, 2. दक्षिणापाङ्गनिविष्टमुष्टि KUMĀRAS. 3, 70. मूलं VĀGBH. 26, 9. कर्णिकसुच. 2, 213, 7. भाण्डागारायुधगारे निविष्टमभवन्मधु HARIV. 12806. वनानां भूमिर्निविष्टतरुणातपा R. 3, 22, 21. विलोचनमसार्निविष्टमलपिङ्गतरुम् KUMĀRAS. 7, 33. काष्ठनिविष्टकौस्तुभ Bhāg. P. 8, 18, 3. अतर्निविष्टज्ञानदीधिति MĀRK. P. 18, 29. यस्मिन्नेतानि (Vorzüge) दृश्यते न चाकार्याणि भारत । स्वभावतो निविष्टानि तत्पात्रं मानमर्हति ॥ MBh. 13, 2192. gerichtet auf: तदभिमुखनिविष्टोत्तानचञ्चूपट Spr. 1428. सूर्यनिविष्टदृष्टि RAGH. 14, 66. श्रुतिस्मृतिन्यायानिविष्टचित्त HARIV. 14637. साम्ये निविष्टचेतसाम् KUMĀRAS. 3, 31. सीतेयमिति निविष्टबुद्धिः R. 5, 19, 34. — c) gelegen: पुरी यमुनातीरे HARIV. 3061. जनपदः सपूतीरे R. 1, 5, 5. 3, 53, 35. 6, 13, 22. — d) sitzend: उदयेः कूले RAGH. 12, 68 (निविष्ट St.). ब्रह्मासनं RĀGA-TAR. 1, 149. आस्थानभूमौ VET. in LA. (III) 23, 11. (मकरः) तीरोपास्ते निविष्टः setzte sich nieder PANĀT. ed. Bomb. IV, 1, 9. — e) der sich häuslich niedergelassen hat, verheirathet: अत्र MBh. 1, 7241. अग्निर्विष्ट u. परिविष्ट. — f) gegründet, angelegt: दिवादासेन निविष्टा नगरां HARIV. 1356. 9597. यस्तु पूर्वनिविष्टस्य तडागस्योदकं करोत् M. 9, 281. — g) bezogen, eingenommen: सम्पङ्क्तिविष्टदेशः M. 9, 252. कृषिकारैः सुनिविष्टो जनपदः R. GORR. 2, 109, 21. अतर्निविष्टपदं शापम् RAGH. 9, 82. — h) begonnen AIT. Br. 7, 10. — i) obliegend, bedacht auf: स्वे स्वे धर्मे M. 7, 35. पाण्डवार्थं MBh. 1, 171. सर्वभूतप्रशमे 3, 1090. शमे 13, 3401. सत्ये HARIV. 9635. मल्लिकिते R. 1, 7, 18. गुणे 20, 24 (गुणैः versehen mit GORR. 21, 23). — Statt निविष्टं HARIV. 3171 liest die neuere Ausg. विचित्रं. Vgl. अग्निविशमान, निविष्टि, निवेश, निवेशन, निवेशिन्, निवेष्टव्य. — caus. 1) zur Ruhe bringen: निवेशयन्मृतं मर्त्यं च RV. 1, 33, 2. TAITTY. Br. 3, 1, 4, 10. RV. 4, 53, 3. 7, 43, 1. — 2) Jmd in ein Haus führen, einquartieren: भार्या स्वभवने MBh. 1, 4424 (med.). HARIV. 8983. R. 2, 42, 28. लोकमये गेहे KATHĀS. 56, 148. मां निवेश्येह MBh. 3, 15607. — 3) ein Haus beziehen lassen so v. a. verheirathen (einen Mann) ÇĀK. 93. — 4) an einem Orte niedersetzen, hinstellen, an einen Ort bringen, — versetzen: यस्माच्चैवोद्धतः स्थानात्तत्रैवायं निवेश्यताम् । मुग्रीवः R. 6, 84, 8. नागान्युप्री तस्याम् HARIV. 1868. वेश्या निवेशिता द्वारवत्याम् 8308. तत्रत्यं स न्यवेशयत् । चातुर्वर्ष्यं निवे देशे धर्म्याश्च व्यवहारिणः ॥ RĀGA-TAR. 1, 117. 3, 353. गन्धर्वनगरं निवेशय स्वे पुरे R. 7, 100, 13. मध्ये निजपरबलयो रथं निवेश्य Bhāg. P. 1, 9, 35. काव्ये, नाट्ये in ein Gedicht, in

ein Drama (Etwas) versetzen so v. a. es dort zur Erscheinung bringen ŚĀH. D. 32, 1. — 5) aufstellen, errichten (ein Gebäude, ein Heiligtum u. s. w.): बन्धनानि सर्वाणि मार्गे M. 9, 288. स्कन्धावारनिवेशे तेन चेह निवेशिते R. 3, 2, 3. पर्वतम् HARIV. 12407. 12410. तत्र वेदी च भूमिं च देवतापतनानि च । निवेश्य MBh. 13, 452. विकारे बुद्धिबन्धम् RĀGA-TAR. 3, 464. शिवलिङ्गानि 2, 131. 4, 276. VARĀH. BRH. S. 56, 14. अथेयं (चर्मरत्नभस्त्रिका) देवतेव श्रुचौ देशे निवेश्यार्च्यमाना प्रातः प्रातः सुवर्णपूर्णैव दृश्यते DAÇAK. 76, 10. fgg. anlegen, gründen (eine Stadt u. s. w.) HARIV. 1846. fg. 5169. 8211. 6392. R. 1, 5, 9. R. GORR. 2, 73, 16. 7, 11, 48. fg. 70, 17. 79, 17. MĀRK. P. 66, 10. न्यवेशयन्नामभिः स्वैस्ते देशाश्च पुराणि च MBh. 1, 2365. वीरेण क्रूराः पञ्च निवेशिताः 3, 5097. आश्रमम् R. 3, 16, 35. bevölkern, bewohnt machen: पुरां HARIV. 1342. 1346. 1391. R. 7, 72, 10. — 6) aufstellen (ein Heer): बलं जनस्थाने R. 3, 60, 31. लुब्धान्मण्डलेन KĀM. NĪTIS. 16, 7. sich lagern lassen: देशे समे सेनाम् MBh. 3, 5170. R. 2, 83, 23 (90, 36 GORR.). 25 (med. GORR. 38). 26 (39 GORR.). निवेशयित्वा 89, 23 (निवेश्य 98, 24 GORR.). 99, 16. 5, 74, 20. 23. KĀM. NĪTIS. 16, 1. 40. RAGH. 3, 42. 16, 37. ÇĀK. 18, 23. PRAB. 82, 2. — 7) sitzen machen, Jmd setzen auf: तामङ्गे R. 1, 18, 21. भूमौ 2, 76, 4. 4, 7, 14. KUMĀRAS. 7, 13. किसलयशयननिवेशिता Git. 2, 13. विष्टे RĀGA-TAR. 4, 555. — 8) stecken —, hineinsetzen in: शरीरं तैलद्रोणायाम् R. GORR. 2, 68, 47. कन्यकां मञ्जूषायाम् KATHĀS. 13, 38. वासकात्तरे भुजम् 18, 281. कलापचक्रेषु निवेशितानन्म (भोगिन्म) R. 1, 16. विमानं सन्ननिवेशितम् R. 3, 61, 14. तत्रवीर्यं चौरा तस्याः MBh. 13, 237. निवेशितातःकुसुमैः शिरोरुहैः R. 3, 8. अम्बुमध्याच्च वस्त्रं चौरनिवेशितम् । प्राप्तवान् KATHĀS. 10, 107. 61, 25. (हृदि) कुकाव्य-कृव्याकृतयो निवेशिताः Spr. 2352. स्वे ख इदं निवेश्य Bhāg. P. 3, 5, 6. — 9) schleudern —, abschiessen auf: भस्त्रान् — तव पुत्रे MBh. 8, 3146 (med.). शरान्मूर्ध्नि R. 5, 42, 7. — 10) aufstecken, aufsetzen, auflegen, anlegen: तं मूले M. 9, 276. धनाये तार्क्ष्यस्तेन निवेशितः RĀGA-TAR. 4, 199. R. 4, 43, 33. स्तम्भस्य पृष्ठे ताम् KATHĀS. 12, 175. स्थलनिवेशितादानी धनुषी RAGH. 11, 14. वामे स्कन्धे भर्तुर्बाहुम् MBh. 3, 16852. वदनं हस्ते HARIV. 7066. अङ्गे चरणौ ÇĀK. 69, v. 1. वामं भुजमासनार्थं RAGH. 6, 16. करं स्तनाये Spr. (II) 1538. काष्ठनिवेशितकस्तुयुगला PANĀT. 226, 19. अङ्गुलिं द्विरदस्य मूर्ध्नि, प्रतापं मेहेन्द्रस्य मूर्ध्नि RAGH. 4, 39. 80. अघरोष्ठे जलजम् eine Muschel an die Lippen setzen 7, 60. नवचूतबाणे । निवेशयामास मधुहिरैफानामातराणीव मनोभवस्य KUMĀRAS. 3, 27. धनुषि चूतशरम् ÇĀK. 133. अस्त्रम् (sc. धनुषि) MĀRK. P. 63, 34. मूर्ध्नि निवेशिताः सर्वा एवाज्ञाः (als Zeichen grosser Ehrerbietung) PRAB. 97, 12. रत्नोत्तसेषु राज्ञामाज्ञां न्यवेशयत् RĀGA-TAR. 3, 138. Schmucksachen, Kleidungsstücke: रत्नानि तस्या गात्रे MBh. 1, 7692. स्तनेषु तन्वश्रुकम् R. 1, 7. कटीतटनिवेशितं रश्नाकलापम् MRĀKH. 11, 15. कर्णेषु नीलोत्पलानि R. 3, 19 (med.). श्रुतिमण्डले (loc.) कुण्डले (acc.) Git. 12, 20. PANĀT. ed. orn. 49, 24. मुद्रामङ्गुली ÇĀK. 84, 14. मालां तस्मिन् KATHĀS. 90, 56. RAGH. 8, 34. ईशस्य पदयुगे प्रसूनाञ्जलिम् KUSUM. 1, 9. पाशं शृङ्गे befestigen MBh. 3, 12786. auftragen Zeichen u. s. w.: तिलकं गाण्डपार्थे R. 5, 37, 5. सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता MRĀKH. 48, 12. चरणान्निवेशितां रागलेखाम् MĀLAY. 46. शासनं पटं सूम्मान्तरनिवेशितम् MĀRK. P. 36, 8. नाम स्वहस्तेन eigenhändig seinen Namen darunterschreiben JĀS. 2, 86. चित्रे so v. a. malen ÇĀK. 42. — 11) bringen —, versetzen auf: धर्म्ये पथि M. 8, 228. मृत्युपथे